उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ

Jain Swetamber Temples of Udaipur City and ancient Jain pilgrims of Mewar

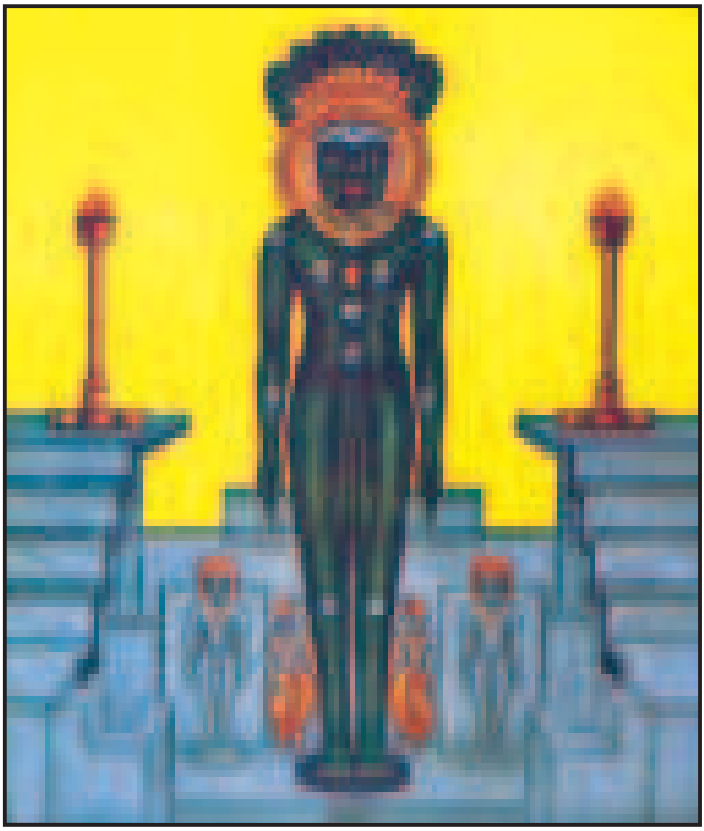

श्री नागेश्वर पार्श्वनाथाय: नम:

संकलनकर्ता / लेखक / प्रकाशक

मोहनलाल बोल्या

37, शान्ति निकेतन कॉलोनी

बेदला – बड़गाँव लिंक रोड, उदयपुर – 313 011 (राज.)

दूरभाष : 0294–2450253

प्रकाशक :

मोहनलाल बोल्या

एवं **सहयोगी**

37, शान्ति निकेतन कॉलोनी
बेदला – बड़गाँव लिंक रोड
उदयपुर – 313 011 (राज.)
दूरभाष : 0294–2450253

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2005

अग्र आवरण :
उदयपुर का सबसे प्राचीन (2,000 वर्ष पुराना) तीर्थ आयड़ का शिखर मंदिर, आदिनाथ भगवान की प्रतिमा

पृष्ट आवरण :
उदयपुर का भावी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री पद्मनाभजी का गुम्बज मंदिर, श्री शांतिनाथजी व श्री अजितनाथजी का शिखर मंदिर

आवरण चित्र (प्रारम्भ में) **:**
श्री केशरिया जी तीर्थ
श्री करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ
श्री देवकुल पाटण (देलवाड़ा)
श्री अद्भूत तीर्थ (नागदा)

अग्र आवरण के पृष्ठ भाग :
उदयपुर नगर का मानचित्र, मंदिर के प्रतीकों सहित

मुद्रक :
चौधरी ऑफसेट प्रा. लि.
11–12, गुरु रामदास कॉलोनी
उदयपुर – 313 001 (राज.)
दूरभाष : 0294–2584071, 2485784

मूल्य : 125 रुपये

उदयपुर के समीप प्राचीन उल्लेखनीय तीर्थ प्रतिमाओं का विवरण

ऋषभदेव जी (केशरिया जी तीर्थ)

यह तीर्थ उदयपुर से 65 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्रतिमा श्याम पाषाण की 41'' ऊँची है। यह प्रतिमा बहुत प्राचीन है, कहा जाता है कि मुनिसुव्रत स्वामी (20वें तीर्थंकर) के समय इस प्रतिमा की पूजा रावण द्वारा की गयी थी। कालान्तर में यह राजगृही, उज्जैन, बड़ोदा, (वटप्रद तीर्थ) में रही। यह भी कहा जाता है कि मयना सुन्दरी ने इसी प्रतिमा के पक्षाल से श्रीपाल को कुष्ट रोग से मुक्त किया। वि.सं. 908 में बड़ोदा (वटप्रद तीर्थ डूँगरपुर) में प्रकट हुई, और बाद में केशरिया जी से करीब 1 किलोमीटर की दूरी पर वृक्ष में से प्रकट हुई, तब से इसी तीर्थ स्थल पर प्रतिष्ठित है। यतिवर्थ श्री दीप विजय जी द्वारा रचित स्त्रोत में लिखा है कि यह प्रतिमा 11 लाख वर्ष तक लंका में रही और लंका से लौटते समय श्री राम प्रतिमा को अपने साथ लाए और उज्जैन में स्थापना की। इसकी पुष्टि झवेर सागर जी महाराज ने संवत् 1947 में प्रकाशित पुस्तक में की। यह प्रतिमा उज्जैन से बड़ोदा (डूँगरपुर) तथा ऋषभदेव आयी। इस क्षेत्र के आदिवासी लोग बड़ी श्रद्धा के साथ इस तीर्थ के दर्शन वंदन करते है। इसकी व्यवस्था राज्य सरकार द्वारा की जा रही है। यह तीर्थ विवाद में चल रहा है।

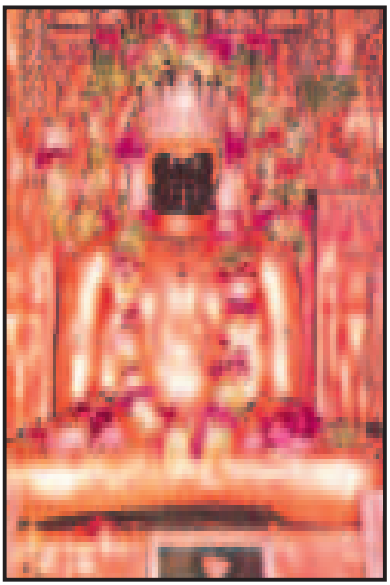

एक नूतन जिनालय (गज मंदिर) निर्माणाधीन है। यहाँ धर्मशाला, भोजन शाला संचालित है।

करेड़ा (भूपालसागर)

यह तीर्थ उदयपुर से चित्तौड़गढ़ मार्ग पर 70 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, इसका पुराना नाम करहेटक, करहेड़ा था, धीरे–धीरे यह करेड़ा कहा जाने लगा। करेड़ा नाम की वजह से इसकी पहचान करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ के रूप में हो गयी। निज मंदिर के एक प्राचीन स्तंभ पर वि.सं. 55 उत्कीर्ण है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में निर्मित यह मंदिर दो शिखरयुक्त है। दो शिखर से बना मंदिर अद्वितीय है तथा अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। यह पूर्व में नौ मंजिला था।

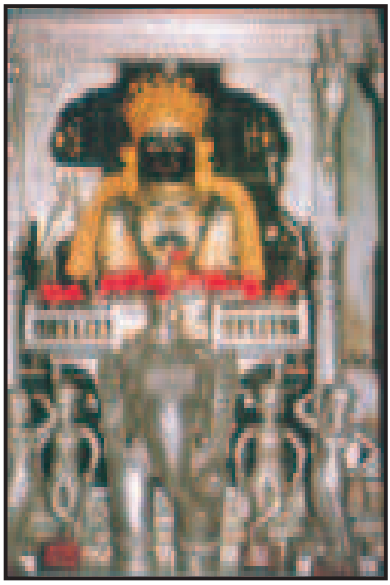

वि.सं. 861 में शाह खीमसिंह द्वारा निर्मित एवं आ. जयानन्दसूरीश्वरजी के हाथों प्रतिष्ठा कराने संवत् 1039 में यशोभद्रसूरीश्वरजी द्वारा प्रतिष्ठा, कराने, वि.सं. 1336 में चैत्र कृष्णा 13 को महाराजा श्री चचगदेव द्वारा इस प्रतिमा की पूजा करने का उल्लेख मिलता है। यह प्रतिष्ठा जीर्णोद्धार कराने के बाद की है। वर्तमान में यह मंदिर वि.सं. 1039 में निर्मित माना जाता है, और वि.सं. 1655 में इसका पुनः जीर्णोद्धार हुआ और प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। प्रतिमा पर भी वि.सं. 1656 का लेख उत्कीर्ण है। संवत् 1321 में मांडलगढ़ के मंत्री पेथड़ शाह के पुत्र झांझण शाह भी यहाँ संघ लेकर आये थे, और जीर्णोद्धार कराया।

मूलनायक की श्याम पाषाण की 29'' ऊँची प्रतिमा है।

वर्तमान में नवीन शिखर बंध बावन जिनालय में भिन्न–भिन्न बावन नाम से श्री पार्श्वनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत् 2023 माह सुदी 13 को आचार्य श्रीमद् विजय दक्ष सूरि जी व सुशील सूरि जी द्वारा करायी गयी।

देवकुल पाटण (देलवाड़ा)

यह तीर्थ उदयपुर से नाथद्वारा मार्ग पर 30 किलोमीटर दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 8 पर स्थित है यहाँ पर चार प्राचीन मंदिर है, जिनमें से आदेश्वर भगवान का मंदिर सबसे प्राचीन है। मंदिर में संवत् 1411 की प्रतिमा प्रतिष्ठित है। प्रतिमा पर लेख इस प्रकार है :–

''संवत् 1411 वर्षे माह वदि 5, दिने बुधे 3 केश वंशे रो नवलखा गौत्रे साधु श्री राम देव भार्या मेला दे तत्पुत्र साधु सहणपाले (नु) भार्या नारिंग दे पुत्र राजलादि सहिते देवकुलपाटणे पूर्वांचल श्री शत्रुन्जय मोर नागकुरिका सहिता प्रति. श्री खरतरगच्छे श्री जिन हर्षवर्द्धन सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि तत्पटे जिन सागर सूरिभ्यः।''

मंदिरों की कला आबू के देलवाड़ा जैन

मंदिर के श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर भी यहाँ के मंदिर को देखकर बनाया है, ऐसा कहा जाता है।

नागदा – शांतिनाथ भगवान का नागहट तीर्थ

यह तीर्थ स्थल मेवाड़ की राजधानी रही है। यहाँ पर पूर्व में पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर संप्रति महाराज द्वारा बनवाने का उल्लेख मिलता है। जैसा कि मुनि सुन्दरसूरीश्वर ने नागहट तीर्थ स्त्रोत में लिखा है, 5 वीं सदी में समुद्रसूरीश्वर ने शास्त्रार्थ में दिगम्बर आचार्यों को परास्त कर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर अपने कब्जे में लिया।

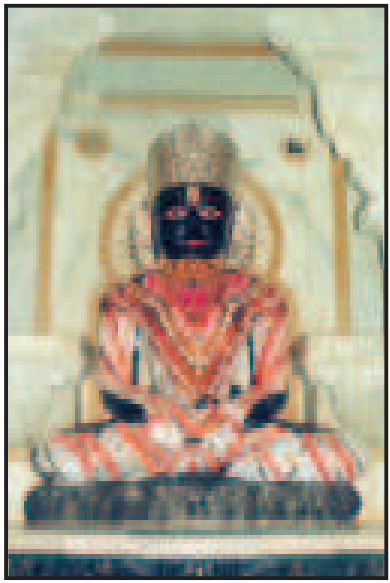

वि.सं. 1494 में शांतिनाथ भगवान के मंदिर में स्थापित प्रतिमा श्याम पाषाण की 108'' ऊँची है। जो अपने आप एक अद्वितीय उदाहरण है। इस प्रतिमा के नीचे लेख इस प्रकार है।

''संवत 1494 वर्षे माघ सुदी 11 गुरुवारे ''श्री भेद पाट देशे श्री देवकुल पाटण पुखरे नरेश्वर श्री मोकल पुत्र श्री कुभकर्ण भूपति विजय राज्ये श्री उस वंशे (से) श्री नवलक्ष शाखा मण्डन सा. लक्ष्मीवर सुत सा. साधु तत्पुत्र साधु श्री रामदेव तत भार्या प्रथम मेलादे द्वितीया माल्हण दे। मेला दे कुक्षि संभूत सा श्री सहणपाल माल्हण दे कुक्षि सरोज हसों पक्ष जिन धर्म कर्पूर बात संघ्ज्ञ धीनु सा. सांरण। नंदगना हीमादे लश्वमादे प्रमुख परिवार सहितेन सा. सांरगेन (ग) निज भूजो पार्जित लक्ष्मी सफली करणार्थ निरूपम् सद्भुत श्री महत श्री शान्ति जिनवर बिंब स परिरिकत् कारित प्रतिष्ठित श्री वर्धमान स्वास्थ्न्वर्य श्री भट्ट खरतरगच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे श्री जिनवर्धन सूरि (स्त) तत्पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि (स्त) तत्पट्ट पूर्वाचल चूलिका सहत करावतीरे श्री जिन सागर सूरिभि (ख) सढ़ा वंदते श्रीभद

धर्म मूर्ति उपाध्याय घटित सूत्र धार मदन पुत्र घरणाणी काम्या।''

पालीताणा में प्रतिष्ठित प्रतिमा की तरह, इस मंदिर में 108'' ऊँची प्रतिमा होने से इस तीर्थ को अद्भूत जी कहते है।

❑❑❑

दिनांक : 26.04.2005

संदेश

श्रीमान् मोहन लाल जी बोल्या

योग्य धर्म लाभ।

ऐतिहासिक उदयपुर शहर के जिन मंदिरों में प्रतिष्ठित प्रतिमा जी के लेख संग्रह करके प्रकाशित करने जा रहे हैं, जानकर प्रसन्नता हुई है। आपका प्रयास अनुमोदनीय है। इसके प्रकाशन से जैन इतिहास की कई अप्रगट बातें प्रकाश में आएगी। प्रतिष्ठा कराने वाले पूर्वाचार्य एवं श्रेष्ठी जनों के विषय में भी कई जानकारियाँ प्राप्त हो सकेगी। जिन शासन देव की कृपा से आपका प्रयास सफल हो यही मेरा मंगल कामना के साथ में आशीर्वाद है।

(पद्मसागर सूरि)

Shree Mahavir Jain Aradhana Kendra, KOBA - 382009, Gandhinagar, Gujarat
Tel. : 079-23276204, 23276205, Fax : 079-23276249 E-mail : kobatirth@yahoo.com

दिनांक : 30.09.2004

संदेश

आचार्य जितेन्द्र सूरीश्वर जी म. की तरफ से भाग्यशाली बोलीया जी सदा धैर्यवान

उदयपुर के मंदिरों की विस्तृत जानकारी आप प्रकाशित कर परमात्मा भक्ति का श्रेष्ठ महत्वपूर्ण कार्य करने जा रहे हैं इससे उदयपुर के साथ ही बाहर से पधारने वाले यात्रियों को व साधु-साध्वियों को उदयपुर मंदिरों के दर्शन में आसानी रहेगी।।

प्राचीन 40 मंदिरों के अतिरिक्त घर मंदिर व अलग अलग सेक्टरों में मोहल्ले में आये घर मंदिर वगैरह का भी समावेश हो जावे तो ठीक रहेगा।

कुल मिलाकर परमात्म भक्ति स्वरूप आपका यह प्रयास सार्थक हो व सभी के उपयोगी ऐसी शुभ अभिलाषा के साथ .....

(आचार्य जितेन्द्र सूरीश्वर)

॥ ॐ अर्हम् ॥

॥ पू. रामचंद्र-भुवन-आनंदघन गुरुभ्यो नमः ॥

॥ आचार्य विजय प्रदीपचंद्र सूरि ॥

दिनांक : 15.06.05, उदयपुर

संदेश

प्रस्तुत ग्रंथ के संकलनकर्ता - लेखक श्री मोहनलाल बोल्या ने अतिपरिश्रमपूर्वक संशोधन-परिमार्जन-लेखन-संकलन एवं प्रकाशन करके ग्रंथ निर्माण का कार्य सुचारू रूप से संम्पन्न किया है - यह तथ्य ग्रंथ को आंशिक पढ़ने से-देखने से दृष्टिगोचर हो रहा है।

यह भी शासनसेवा का ही एक नमूना है। संकलन सुंदर हुआ है।

लेखक को धन्यवाद है, उनकी तरफ से हुए परिश्रम के लिये, कष्ट के लिये, पुरुषार्थ के लिये।

आशीर्वाद के साथ -

आ. आनंदघनसूरिजी की ओरसे,
आ. प्रदीपचंद्रसूरि

(आ. प्रदीप चंद्र सूरि)

संदेश

सुश्रावक,

श्री मोहनलाल जी बोल्या,

धर्मलाभ,

बड़ा हर्ष का अनुभव होता है कि जै.श्वे.मू.स. उदयपुर में स्थित जिन मंदिर जी के भव्य और प्राचीन जिनालय के गुणगान अभी तक किसी भाग्यशाली श्रावक द्वारा किसी प्रकार का इतिहास, मेरी जन्मभूमि उदयपुर के होते हुए भी पढ़ने को नहीं मिला, आपका यह प्रयास अतिसराहनीय है।

पुस्तक में सुश्रावक के द्वारा मंदिर जी में प्रतिष्ठित प्रतिमा के स्थापना समय और आचार्य भगवत द्वारा कि गई प्रतिष्ठा काल आदि का विस्तृत वर्णन लिखा होने से पवित्रता और पूर्वश्रावकों का धर्मानुराग को प्रदर्शित करता है।

प्राचीन जिनालयों की जानकारी के साथ ही लेखक की भावना है कि जिनालयों की सुरक्षा भी बनी रहें, इसी भावना से प्रेरित हो अपना उत्तरदायित्व निभाया है।

शासन देवी माँ पद्मावती आपके इस प्रयास को सफल करे, यही शुभकामना एवं आशीर्वाद।

आपका शुभ चिंतक आचार्य पद्मप्रेम सूरी का हार्दिक धर्मलाभ

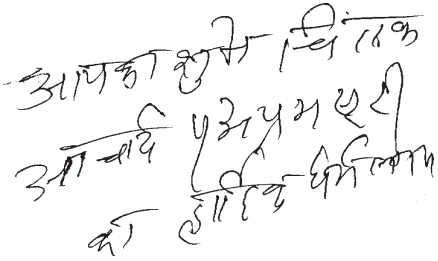

शुभाशीः

मेवाड़ की सुरम्यवादियों के मध्य स्थित उदयपुर नगर की शान अपने आप में बड़ी अनूठी और निराली है। उदयपुर नगर का इतिहास अलौकिक और गौरवशाली है। यहाँ का कण-कण उदयपुर की गौरव गाथाऐं गाता है। यहाँ की हवाओं में शौर्य की कहानियाँ है।

यहाँ के अणु अणु में से साधना और वीरत्व की शहनाई गूँजती है। बहते झरनों की कल कल धारा में ऋषि मुनियों की महिमा के गीत सुनाई देते है।

इस अतिप्राचीन नगर में श्रावकों ने अपने परमात्म प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिये समय समय पर जिनमंदिर का निर्माण किया।

भावी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री पद्मनाभ स्वामीजी का मंदिर अपने आप में एक विशिष्ट कलाकृति है। भावी तीर्थंकर श्री पद्मनाभ का सर्वप्रथम जिनालय यहीं बना, जिसकी प्रतिष्ठा वि. सं. 1819 माघ शुक्ल पंचमी को खरतरगच्छ के हीरसागर गणि द्वारा संपन्न हुई थी। ऐसी विशाल एवं भव्य प्रतिमा वास्तुशिल्प की अनुपम कलाकृति के साथ-साथ दिव्यता और भव्यता की अनूठी साधना है।

ज्यों-ज्यों नगर की सीमाओं का विस्तार होता गया, त्यो त्यों श्रावक समाज भी विस्तृत होने के साथ साथ हर उपनगर में बसा, तब परमात्म पूजन और दर्शन

के लिये हर उपनगर में जिनमंदिर की आवश्यकता महसूस हुई। फलस्वरूप हर उपनगर में जिनमंदिर का निर्माण हुआ। आज इस नगर में 40 से अधिक छोटे बड़े जिनमंदिर है।

यहाँ के जिनमंदिरों की कला, पुरातत्व और ऐतिहासिकता की जानकारी के लिये एक ऐसे ग्रन्थ की लम्बे समय से प्रतीक्षा की जा रही थी, जिसमें जिन मंदिरों का प्रामाणिक इतिहास अंकित हो। पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वर जी महाराज साहब के तीसरे और यहाँ हुए तीन चौमासे के अंतिम चातुर्मास में पूज्य श्री ने मुझे भी इस हेतु प्रेरित किया था। काफी काम हुआ भी! शिलालेखों का संग्रह भी किया गया। डायरी में इतिहास का संक्षिप्त लेखन भी बिंदुओं के रूप में किया गया। पर अन्यान्य कार्यवश यह काम पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाया।

यही कार्य श्रावक प्रवर श्री मोहनलालजी बोल्या कर रहे हैं, यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है। श्री मोहनलाल बोल्या का परिवार पूज्य गुरुदेव श्री से पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ परिवार है। मैंने इन्हें सदैव पूज्य गुरुदेव श्री के परम भक्त श्रावक के रूप में पाया है। उदयपुर का यह बोल्या परिवार तपागच्छ का अनुयायी होने पर भी पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री का अनन्य भक्त रहा है। इनकी भक्ति और श्रद्धा मैंने भी निरंतर प्राप्त की है।

इस ग्रंथ के आलेखन और प्रकाशन से श्री बोल्या जी एक कमी की पूर्ति कर रहे हैं, यह आनन्द एवं अनुमोदन का विषय है।

मैं कामना करूँगा कि इस ऐतिहासिक ग्रन्थ द्वारा समाज अपने पूर्वजों के पुरुषार्थ को जाने और उनके द्वारा प्राप्त इस महान् और पवित्र धरोहर को पूर्ण रूप से संरक्षित एवं संवर्धित करने में पुरुषार्थशील बनें। यही बोल्या जी के इस पुरुषार्थ का परिणाम है।

(उपाध्याय मणिप्रभसागर)

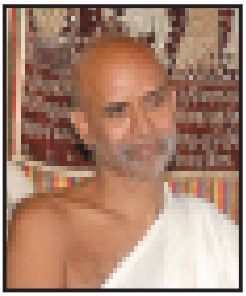

दिनांक : 30.07.2005

संदेश

उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ का संकलन .....एक नजर देखा - प्रयास सराहनीय लगा।

उदयपुर नगर के मंदिर को विशिष्ठ माहिती के साथ उनसे लगती भिन्न जानकारियों से ग्रन्थ समृद्ध बन गया है। मेवाड़ के पुराने तीर्थों के संग्रह का भी सुन्दरतम कार्य किया है।

कुछ अन्य विषयों से भी यह सृजन विभूषित बना है। कुल मिलाकर एक उपयोगी संकलन के रूप में यह ग्रंथ तैयार हुआ है।

इस ढलती उम्र में नौकरी से निवृति के पश्चात् भी, जिसमें अन्य लोग प्रायः थककर बैठ जाते है, उदासीन हो जाते है, उसमें भी श्री मोहनलाल जी बोल्या ने जिस जिन्दादिली से यह कार्य किया वह काबिल-ए-तारीफ है। इस कार्य से उन्होंने अपनी ढलती उम्र को संध्या की लालिमासा खिला दिया हैं। शासन देव उन्हें शक्ति दे कि ऐसे ही शासन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सृजन कार्य करते रहे, यही अभ्यर्थना।

(आ. अपूर्वमंगल रत्न सागर सूरि)

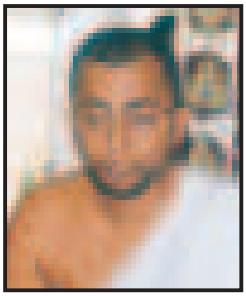

संदेश

सुश्रावक

श्री मोहनलालजी,

धर्मलाभ,

अनेक प्राचीन जिनालयों से सुशोभित, भक्ति व शौर्य की भूमि, उदयपुर की धन्यधरा पर वर्षो से रहने पर भी कितने ही भाग्यशाली ऐसे होंगे कि जिनको अपने मंदिरों की पूरी जानकारी नहीं होगी।

विहार करके पधारने वाले साधु-साध्वीजी म. साहब को एवं बाहर से पधारने वाले यात्रिओं को भी आपकी पुस्तक से मार्गदर्शन मिलेगा।

उदयपुर के भव्य एवं प्राचीन जिन मंदिरों का इतिहास प्रकट करने का आपका प्रयास स्तुत्य है। अनेक भव्य जीवों को सम्यक् दर्शन निर्मल कराने में आपका पुरुषार्थ सहायक बनेगा।

मृदुरत्नसागरका

(मृदुरत्न सागरका)

दिनांक : 26 जुलाई, 2005

संदेश

उदयपुर सुश्रावक मोहन लाल जी

धर्मलाभ !

उदयपुर केवल झीलों की नगरी ही नहीं है, अपितु धर्म नगरी भी है। प्राचीन, मनोहर मंदिर एवं उनका प्रमाण है।

भक्तों के दुर्लक्ष की वजह से ऐसे ज्वाजल्यमान इतिहास में पूजनीय स्थान लेनेवाले मंदिर उपेक्षित हो गए है।

लेकिन आनंद की बात है, कि आप कड़ा परिश्रम करके जैन मंदिरों की प्राचीनता, पुराने लेखों को प्रकाश में लाकर दुर्लभ बातें सुलभ जता कर गौरवगाथा की पुस्तिका प्रकाशित करके जन-जन के हाथों में पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे है।

सुंदर प्रयत्न का अनुमोदन।

आपका प्रयत्न निर्विघ्न सम्पन्न हो।

अभयदेवसूरि

(अभय देव सूरि)

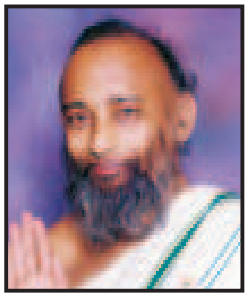

जैन उपाश्रय
नागलपुर (ढींढ)
जिला-मांडवी-कच्छ
पिन - 370 465

दिनांक : 02 अगस्त, 2005

संदेश

।। शिवमस्तु सर्वजगतः ।।

सुदेव-गुरु-धर्मानुरागी, सुश्रावक श्री मोहनलालजी बोल्या

योग्य,

सादर धर्मलाभ।

आप उदयपुर के 56 जैन श्वेताम्बर मंदिरों में उत्कीर्ण लेखों का संग्रह करके उन सभी मंदिरों के निर्माणक एवं प्रतिष्ठापक आचार्य भगवंतादि की जानकारी के साथ मेवाड़ की प्राचीन तीर्थ-प्रतिमाएँ एवं अधिष्ठायक देव-देवियों की महिमा की विस्तृत जानकारी मय-रंगीन चित्रों के पुस्तक प्रकाशित करने जा रहे हैं, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद, सह शुभाशीर्वाद।

प्रस्तुत पुस्तक अनेक श्रद्धालु आत्माओं एवं संघों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी, यह निःसंदेह है। यह कार्य बहुत आवश्यक था। आपका पुरुषार्थ सफल एवं यशस्वी हो, यही शुभ कामना।

— गणि महोदयसागर
(गणि महोदयसागर)

॥ श्रीशंखेश्वरचिंतामणिपार्श्वनाथाय नमः ॥

श्रीरामचन्द्रं सूरीन्द्रं प्रणौमि

संदेश

श्री मोहनलालजी बोल्या,

धर्मलाभ !

आपने काफी परिश्रम कर उदयपुर के जैन श्वेताम्बर मंदिरों एवं पवित्र तीर्थों का संकलन किया। यह सराहनीय है। आपने जैन शासन की अपूर्व सेवा की है। आपश्री ने भागीरथ पुरुषार्थ द्वारा, तन-मन-धन से दिन-रात एक ही लक्ष्य रख कर, जो अनमोल खज़ाना सकल श्री संघ को भेंट किया है, वह आत्मार्थी जीवों को नई दिशा, नए जीवन, नए मार्ग पर चलने में सहायक अवश्य बनेगा।

चातक दृष्टि से आपने संपूर्ण उदयपुर के मंदिरों का पूर्ण इतिहास फोटो सहित, रूपरेखा सहित, सुलभ तरीके से संयोजित किया जो कि भवसागर में भटकते जीवों के लिए दिवादाँडी के समान है। आप द्वारा रचित ''उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ'' नामक पुस्तक का समाज दर्शन, वंदन, अनुमोदन करेगा, उसके सम्पूर्ण श्रेय और यश के भागी आप ही है। आगे और भी विशेष आत्मोन्नति का कार्य करे, यही शुभेच्छा।

सा. सुदर्शना श्रीजी की

आज्ञा से

लि.सा. कल्पलता श्रीजी (डहेलावाला) की शिष्या

नयपूर्णा श्री ''कलावती''

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री संघ, उदयपुर

श्री अजितनाथजी का उपाश्रय, आराधना भवन, मालदास स्ट्रीट, उदयपुर – 313 001

अध्यक्ष **डॉ. शैलेन्द्र हिरन**

मंत्री **सुरेश चन्द्र सिंघटवाड़िया**

दूरभाष : 0294–2526624 (नि.), 2256614 (कार्या.)
मोबाईल : 94141–59059

दिनांक : 17 अगस्त, 2005

उदयपुर

संदेश

श्रीमान् बोल्या सा.

जैन तीर्थ स्थलों में मेवाड़ व राजस्थान का विश्व मानचित्र पर अपना एक महत्वपूर्ण स्थान हैं।

तीर्थ स्थलों पर आवागमन बढ़ना उतना ही जरूरी है, जितना धर्म का प्रचार, क्योंकि यह तीर्थ स्थल ही अपने तीर्थंकर, पूर्वाचार्यों व अपने पूर्वजों आदि की याद दिलाते हैं। इतिहास की प्रामाणिकता के ये स्मारक साक्षी स्वरूप है। तीर्थों का वातावरण इतना निर्मल व शुद्ध होता है कि जो मानव को भवसागर से पार लगा देता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक से उदयपुर के तीर्थ स्थलों के अवलोकन के लिए यात्रियों का आवागमन बढ़ेगा।

यह पुस्तक ही नहीं, तीर्थ दर्शन ग्रंथ हैं, जिसके माध्यम से हम घर बैठे-बैठे ही मानस यात्रा-भाव यात्रा करने का लाभ प्राप्त कर सकेंगे। मूर्ति की तरह चित्र भी शुभ भाव जगाने में कामयाब होते हैं। इस दृष्टि से भी इस पुस्तक का उपयोग आत्मा के लिए हितकर रहेगा। परमात्मा के प्रति जो भक्ति भाव हमारे हृदय में प्रदिप्त होंगे, वह हमें आत्मिक प्रसन्नता एवं आत्मिक उन्नति की ओर ले जाएंगे, ऐसी शुभेच्छा।

आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने व सरकारी सेवा निवृत्ति के पश्चात् उदयपुर के जैन मंदिरों के इतिहास व प्रतिमाओं के संबंध में सम्पूर्ण जानकारी इस पुस्तक के माध्यम से प्रकाशित कर आपने जैन शासन की अमूल्य सेवा की है। इस पुस्तक से भावी पीढ़ी काफी लाभान्वित होगी व भविष्य में यह अनुपम सौगात सिद्ध होगी।

शैलेन्द्र हिरन.

(डॉ. शैलेन्द्र हिरन)

रजिस्ट्रेशन नं. 217 स्थापित 20.11.1946

श्री जैन श्वेताम्बर महासभा

उदयपुर – 313 001 (राज.) दूरभाष : 0294–2420462

रजि. कार्यालय : श्री जैन धर्मशाला, हाथीपोल, उदयपुर–313 001

अध्यक्ष — **दीवान सिंह बाफना** — फोन : 0294–2523307

मंत्री — **राजेन्द्र सिंह कोठारी** — फोन : 0294–2418404 (का.), 2560475 (नि.)

दिनांक : 30.07.2005

संदेश

परम आदरणीय श्रद्धेय श्रीमान् मोहनलाल बोल्या सा.,

सादर जय जिनेन्द्र !

आपने अथक परिश्रम, पूर्ण लगन, समर्पित भाव से उदयपुर व आस-पास के जिन मंदिरों में बिराजित (प्रतिष्ठित) जिन प्रतिमाओं और धातु प्रतिमाओं के लेख एवं शिलालेखों की नकल तैयार कर मंदिरों का सम्पूर्ण इतिहास वास्तविक तथ्यों के साथ प्रकाशित कर प्रबुद्ध नागरिकों व चतुर्विध श्रीसंघ को अमूल्य उपहार भेंट किया है, उसके लिये हम सब आपके आभारी हैं और भावी पीढ़ी के लिये एक प्रेरणा प्रज्जवलित करेगा।

इसी प्रकार आप अपने अनुभव के आधार पर पूरा प्रयास कर मेवाड़ के जिन मंदिरों व प्रतिमाओं के भी लेख शिलालेख इकट्ठा कर प्रकाशित कर समाज हित के एक अति आवश्यक अंग की पूर्ति करावें, जिससे भविष्य में होने वाली कोई दुर्घटना चोरी, टूट-फूट से बचाव में सहायता मिले।

मैं शासन देव से प्रार्थना करता हूँ कि आपका स्वास्थ्य अनुकूल रहे। आप दीर्घायु बने व साथ ही आपकी भावी योजना में सहयोगी बनने की इच्छा के साथ आपका शारीरिक स्वास्थ्य, हृदय रोग, आँख की कमजोर रोशनी होते हुए भी संघ हित का जो कार्य किया है, उसके लिये पुनः पुनः आभार।

धन्यवाद।

आपका

(दीवान सिंह बाफना)

लेखकीय

राजस्थान का मेवाड़ प्रांत अरावली पहाड़ियों से आच्छादित है, और यहाँ प्रकृति अपनी अनुपम छटा बिखेरती है। वहीं यह प्रांत सांस्कृतिक, साहित्यिक एवम् कलात्मक वैभव की भी छटा बिखेरता है। उदयपुर शहर मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह जी के नाम पर संवत् 1616 से बसा हुआ है, लेकिन इसके पूर्व पिछोला झील संवत् 1438 में बनी, और इसके पूर्व में पिछोली नाम का कस्बा बसा हुआ था। यहाँ चारों ओर झीलें बनी है, इसलिये इसे झीलों की नगरी कहा जाता है। यहाँ की धरा जैन श्वेताम्बर मंदिर के विषय में भी विशिष्ट स्थान रखती है, उदयपुर शहर में ही 56 श्वेताम्बर मंदिर है, जिसके कारण इसको देव नगरी भी कहा जाता है, जो यहाँ की स्थापत्य कला व उनकी प्राचीनता का द्योतक है, लेकिन यह दुःख की बात है, कि इन मंदिरों का पूर्व में कोई विशेष अध्ययन नहीं हुआ है (जहाँ तक मुझे जानकारी है), जिसके फलस्वरूप आज तक इन मंदिरों के बारे में कोई विस्तृत जानकारी समग्र रूप से उपलब्ध नहीं है। यहाँ तक किसी मंदिर में प्रतिमा की चोरी हो जाय तो उसकी प्रथम दृष्टया रिपोर्ट लिखवाने के लिए भी विचार करना पड़ जाता है, क्योंकि प्रतिमा का कोई विशिष्ट रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है। अतः मैंने अपनी अन्तः प्रेरणा से यह धार्मिक कार्य अर्थात् मंदिरों के संकलन का कार्य करने का निश्चय कर दिनांक 1.9.2003 से प्रत्येक मंदिर में जाकर प्रतिमा के नीचे लिखे आलेख को लिपिबद्ध किया, और उनके निर्माण काल की सूचना संग्रहित कर पुस्तक में दर्शाने का प्रयास किया है। प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख में संवत् व तिथि स्थानीय प्रचलित भाषा में है, लेकिन पाठकों की सुविधा की दृष्टि से अंग्रेजी भाषा के अंकों में दर्शाया गया है।

उदयपुर शहर के श्वेताम्बर मंदिरों की विस्तृत विवेचना के संदर्भ में यह प्रथम पुस्तक होगी, जिसमें मंदिरों व जिन प्रतिमाओं की विस्तृत जानकारी के साथ–साथ जैन धर्म की प्राचीनता, मुख्य शाखा, शिलालेख, मूलनायक के रंगीन चित्र उदयपुर के आस–पास के दर्शनीय तीर्थस्थल तथा अधिष्ठाता देवी–देवताओं की जानकारी सचित्र के देने का प्रयास किया है। आशा है कि मेरा यह प्रयास पाठकों को पसन्द आएगा व उससे लाभान्वित भी होंगे।

पुस्तक में दी गयी जानकारी में पूर्ण सावधानी रखी गई है, फिर भी प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण लेख देखने, पढ़ने व लिखने में किसी प्रकार की त्रुटि रह गयी हो, तो मैं पाठकों से क्षमा चाहता हूँ तथा साथ ही उसमें संशोधन, सुझाव आपके विचारों को भी आमंत्रित करता हूँ, जिससे आगामी संस्करण में सुधार किया जा सके।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में दैविक शक्ति का आशीर्वाद रहा है, जिससे मेरा स्वास्थ्य खराब होने व नेत्र ज्योति कम होने पर भी यह कार्य पूर्ण कर सका। इस कार्य को सम्पन्न करने में साधु–संतों का विशेष रूप से आचार्य श्री जितेन्द्र सूरि जी व मु. श्री निपुण रत्न विजय जी का आशीर्वाद रहा, जिन्होंने तथ्य शुद्धिकरण किए। मेरे परिवार के सदस्य, रिश्तेदार व मित्रों द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ, उसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। मैं उन सभी धर्म प्रेमी सदस्यों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने आर्थिक व अन्य किसी न किसी रूप से सहयोग प्रदान किया है, जिससे यह कार्य सम्पन्न हो सका। मैं चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. के सभी सदस्यों को भी धन्यवाद देना चाहूँगा, जिनके समर्पित प्रयास से यह प्रकाशन ''पर्युषण पर्व'' पर धर्मप्रेमियों को उपलब्ध हो सका। सभी को मेरा साधुवाद, धन्यवाद।

इस प्रकार का धार्मिक कार्य करने के प्रेरणा स्त्रोत मेरे परिवार के सदस्य है, इसलिए यह पुस्तक उनको समर्पित करने का मुझे गौरव प्राप्त हुआ है।

–मोहनलाल बोल्या

इन्हें समर्पित.....

पितामह स्व.
श्री मोतीलाल जी
सा. बोल्या
जन्म : माघ विद 3
सं. 1936
स्वर्गवास : मगसर
विद 3 सं. 2006

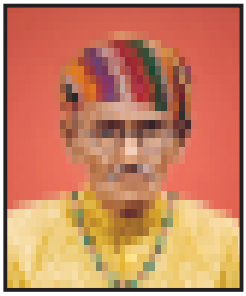

पितामही स्व.
श्रीमती सोहन कुँवर
जन्म :
सन् 1882
स्वर्गवास :
दिनांक : 03.12.1972

पिता स्व. श्री रोशन
लाल जी सा. बोल्या
जन्म :
दिनांक : 04.06.1914
स्वर्गवास :
दिनांक : 28.10.1988

माता स्व.
श्रीमती गुलाब कुँवर
जन्म :
सन् 1915
स्वर्गवास :
दिनांक : 08.04.1957

भ्राता स्व. श्री महेन्द्र
सिंह जी सा. बोल्या
जन्म :
दिनांक : 16.04.1950
स्वर्गवास :
दिनांक : 20.08.1978

भ्राता स्व. श्री भँवर
लाल जी सा. बोल्या
जन्म :
दिनांक : 02.10.1934
स्वर्गवास :
दिनांक : 01.10.2004

पत्नी स्व.
श्रीमती बसन्त कुँवर
जन्म :
दिनांक : 09.04.1940
स्वर्गवास :
दिनांक : 22.04.1966

बहन कुमारी स्व.
मीना बोल्या
जन्म :
दिनांक : 26.01.1956
स्वर्गवास :
दिनांक : 28.12.1984

मंगला चरण

णमो अरिहंताणं।

णमो सिद्धाणं।

णमो आयरियाणं।

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए, सव्वसाहूणं।

एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणा सणों

मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मं हवइ मंगलं।।

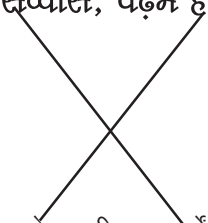

मंत्र का भावार्थ :–

मंत्र में अरिहंतों को, सिद्धों को, सभी आचार्यों को, उपाध्यायों को तथा समस्त सुसाधुओं को नमस्कार किया है।

यह मंत्र सभी प्रकार के पापों को नष्ट करने वाला है और इसका स्मरण मात्र करने से सभी प्रकार से मंगल होता है।

ॐ

सर्व मंगल मांगल्यम्

सर्व कल्याण कारणम्।

प्रधानं सर्व धर्माणाम्।

जैनं जयति शासनम्।।

卐

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय का नाम	पृ.संख्या
❑	उदयपुर के समीप प्राचीन उल्लेखनीय तीर्थ प्रतिमाओं का विवरण	iii
❑	संदेश	vi
❑	लेखकीय	xix
❑	समर्पण.....	xxi
❑	मंगल प्रार्थना	xxii
❑	वंदन	xxvi
1.	जैन धर्म की प्राचीनता व उसकी मुख्य शाखाएँ	1
2.	श्री शीतलनाथ जी का मंदिर, घंटाघर, उदयपुर	8
3.	श्री चन्द्र पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, जगदीश रोड, उदयपुर	30
4.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (कसोटी का), जगदीश रोड, उदयपुर	33
5.	श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर (बापनों का मंदिर), जगदीश रोड, उदयपुर	37
6.	श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, कसारों की ओल, उदयपुर	43
7.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर उदयपुर (बाबेलों की सहरी, मोहली चोहट्टा)	45
8.	श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर (दादा देवरी), मोहली चोहट्टा, उदयपुर	50
9.	श्री केशरियाजी का मंदिर, बदनोर की हवेली, उदयपुर	52
10.	श्री शीतलनाथ जी का मंदिर (हुमडों का मंदिर), जड़ियों की ओल, उदयपुर	60
11.	श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सिंघटवाड़ियों की सेहरी, उदयपुर	72
12.	श्री वासुपूज्य भगवान का (काँच का) मंदिर, बड़ा बाजार, उदयपुर	75
13.	श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर (चतराम का उपाश्रय), बड़ा बाजार, उदयपुर	80
14.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर कोलपोल, उदयपुर	82
15.	श्री आदेश्वर भगवान का (चौमुखा जी) मंदिर, बड़ा बाजार, उदयपुर	84
16.	श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मोचीवाड़ा, उदयपुर	87
17.	श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर (बापना का मंदिर), नलवाया चौक, धानमण्डी, उदयपुर	90
18.	श्री आदेश्वर भगवान (चौमुखा जी) का मंदिर, देहली गेट के अंदर	94
19.	श्री नेमिनाथ जी का मंदिर (भट्टारक की थोब), देहली गेट के बाहर, उदयपुर	97
20.	श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, थोब की बाड़ी, देहली गेट बाहर, उदयपुर	100

क्र.सं.	अध्याय का नाम	पृ.संख्या
21.	श्री सम्भवनाथ स्वामी का मंदिर, कालका माता रोड, गणेशनगर, पहाड़ा, उदयपुर	104
22.	आयड़–आटपुर–आघाटपुर–तांबावती–नगरी के जैन मंदिर (श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, शांतिनाथ भगवान, आदेश्वर भगवान, महावीर स्वामी, सुपार्श्वनाथ भगवान) श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथजी मंदिर	107
23.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, आयड़	114
24.	श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर (आयड़ तीर्थ)	118
25.	श्री महावीर स्वामी का मंदिर (आयड़ तीर्थ)	121
26.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर (आयड तीर्थ)	123
27.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, अरविंद नगर, सुन्दरवास, उदयपुर	125
28.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, हिरण मगरी, सेक्टर–3, उदयपुर	128
29.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, हिरण मगरी, सेक्टर–4, उदयपुर	131
30.	श्री कुंथुनाथ स्वामी का मंदिर, स्वामी नगर, टेकरी, उदयपुर	134
31.	श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, सेंट्रल एरिया, उदयपुर	137
32.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, सवीना खेड़ा, उदयपुर	139
33.	श्री शांतिनाथ पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, हिरण मगरी, सेक्टर–11, उदयपुर	141
34.	श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, हिरण मगरी, सेक्टर–13, (बाबेलों का मंदिर), उदयपुर	146
35.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर, हिरण मगरी, सेक्टर–14, उदयपुर	148
36.	श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, शिवाजी नगर, उदयपुर	151
37.	श्री वासुपूज्य स्वामी का मंदिर (दादावाड़ी), सूरजपोल, उदयपुर	154
38.	श्री श्यामला पार्श्वनाथ मंदिर, सेठ जी की बाड़ी (दादावाडी), चेतक सर्कल, उदयपुर	161
39.	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, भुवाणा, उदयपुर	167
40.	श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर, बेदला, उदयपुर	169
41.	श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, देवाली, उदयपुर	172
42.	श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, अम्बामाता स्कीम, उदयपुर	176
43.	श्री महावीर भगवान का मंदिर, मोती मगरी स्कीम, उदयपुर	179
44.	श्री पद्मनाभ स्वामी का मंदिर (भावी चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर), चौगान चौराहा, उदयपुर	183
45.	श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर (चौगान का मंदिर), उदयपुर	190
46.	श्री शांतिनाथ भगवान का मंदिर (चौगान), उदयपुर	192
47.	श्री महावीर भगवान का मंदिर (चौगान), उदयपुर	194

क्र.सं.	अध्याय का नाम	पृ.संख्या
48.	श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, हाथीपोल, बाहर, उदयपुर	198
49.	श्री वासुपूज्य भगवान का मंदिर, हाथीपोल, उदयपुर	200
50.	श्री आदेश्वर भगवान का मंदिर बोहरवाड़ी, (वाडी जी का मंदिर), उदयपुर	204
51.	श्री गौड़ी पार्श्व नाथ जी का मंदिर, भूतमहल, मालदास स्ट्रीट, उदयपुर	211
52.	श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ जी का मंदिर, भूतमहल, मालदास स्ट्रीट, उदयपुर	215
53.	श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, मालदास स्ट्रीट, उदयपुर	220
54.	श्री अजितनाथ भगवान का मंदिर, मालदास स्ट्रीट, उदयपुर	224
55.	श्री ऋषभानन स्वामी का मंदिर, मोती चोहट्टा, उदयपुर	229
56.	श्री चन्द्र प्रभु जी का मंदिर, गणेश घाटी, उदयपुर	235
57.	श्री ऋषभदेव जी का मंदिर, गणेश घाटी, उदयपुर	237
58.	उदयपुर नगर में स्थापित गृह मंदिर की नामावली	239
59.	जिन आगम (शास्त्र) का सूत्रपात व नामावली	240
60.	श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संप्रदाय में गच्छों की नामावली	242
61.	तीर्थंकरों के नाम मय उनके अधिष्ठाता देवी–देवताओं के नाम	244
62.	प्रभावशाली अधिष्ठाता देवी महिमा विवरण	245
63.	प्रभावशाली अधिष्ठाता देव महिमा विवरण	248
64.	तपागच्छिय अधिष्ठायदेव व अन्य का महिमा विवरण	251
65.	पुस्तक प्रकाशन सहयोगी सदस्यों की नामावली	254
66.	उदयपुर नगर में हुए चातुर्मास की नामावली (मालदास स्ट्रीट, उदयपुर)	256
67.	उदयपुर नगर के मूर्तिपूजक समाज में दीक्षित पुण्यात्माओं की नामावली	258
68.	इतिहास के झरोखें में उदयपुर के पर्यटन स्थल	260

।। श्री नाकोड़ा भैरवाय नमः ।।

।। श्री पद्मावती माताय नमः ।।